© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 08 , Issue : 04 | October - December 2021

"स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन"

राजेश कुमार शर्मा
शोध छात्र
मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

प्रो० (डॉ०) के०सी० बेहेरा
पर्यवेक्षक
मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार
चित्तौड़गढ़ (राजस्थान)

सारांश

किसी भी राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली की सफल्ता उसके शिक्षकों पर निर्भर करती है, क्योंकि शिक्षक ही सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया का संवाहक है। अतः शिक्षा की गुणवत्ता एवं उन्नयन की दृष्टि से शिक्षकों का प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने शिक्षण–प्रशिक्षण कार्यक्रम को स्ववित्तपोषित संस्थानों को सौंपने की सिफारिश की जिसके पक्ष में यह तर्क था कि जनसंख्या वृद्धि को देखते हुए अधिक विद्यार्थियों को प्रवेश की सुविधा एवं रोजगार मिलेगा। प्रशिक्षण संस्थानों को आर्थिक लाभ होगा तथा आवश्यकतानुसार प्रशिक्षित अध्यापकों की पूर्ति हो सकेगी, लेकिन सरकारी सहायता प्राप्त तथा स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का स्तर भिन्न–भिन्न होता है। इसी का अध्ययन करने हेतु शोधार्थी ने उक्त विषय का चयन किया। तद्हेतु 9 सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थानों तथा 11 स्ववित्तपोषित संस्थानों के 180 शिक्षक प्रशिक्षकों (पुरुष एवं महिला) का चयन यादृच्छिकी चयन विधि द्वारा किया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया। संकलित आंकड़ों के विश्लेषण से सरकारी सहायता प्राप्त एवं स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ।

मुख्य शब्दः– स्ववित्तपोषित, सरकारी, शिक्षक–प्रशिक्षक, शिक्षक–अभिरूचि।

प्रस्तावनाः–

यह तो सर्वविदित है कि किसी भी राष्ट्र की शिक्षा–प्रणाली की सफलता उनके शिक्षकों की कार्यक्षमता पर निर्भर करती है, क्योंकि शिक्षक ही सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया का संवाहक है। अतः शिक्षा की गुणवत्ता एवं उन्नयन की दृष्टि से शिक्षकों का प्रशिक्षित होना अनिवार्य हो जाता है। श्रेष्ठ शिक्षकों का निर्माण, उन्नत प्रशिक्षण पर निर्भर करता है। इसके लिए सुयोग्य, प्रवीण एवं दूरदर्शी शिक्षक–प्रशिक्षकों की आवश्यकता होती है।

अध्यापकों के प्रशिक्षण की आवश्यकता प्राचीन काल से ही रही है। अध्यापक शिक्षा के ऊषाकाल में हमारे देश में ब्रिटिश शासन तब ब्रिटिशों ने अपने तरीकों से अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षण प्रारम्भ किया; लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारे देश के शिक्षाविदों ने नवीन परिस्थितियों के आधार पर

देश में शिक्षक–प्रशिक्षण का आरम्भ किया। यह सर्वविदित तथ्य है कि भारत में विगत दो दशकों से शिक्ष के क्षेत्र में उदारीकरण एवं निजीकरण का दौर चल रहा है, जिसके कारण शिक्षा के क्षेत्र में पठन–पाठन, शाध के स्तर में उतार–चढ़ाव जारी है। इसी का परिणाम है कि शिक्षा एवं प्रशिक्षण के प्रत्येक स्तर पर निजीकरण के द्वार खुलने से गाँवों एवं शहरों में प्रशिक्षण संस्थान स्थापित हो गए हैं। निजी तन्त्र द्वारा स्थापित ये स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान क्या छात्राध्यापकों को वांछित एवं समयानुकूल प्रशिक्षण प्रदान कर पा रहे हैं? क्या सरकार द्वारा स्थापित संस्थानों में तथा स्ववित्तपोषित संस्थानों में संचालित शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता में कोई भिन्नता है? क्या दोनों प्रकार के शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षक–प्रशिक्षकों की स्थिति में कोई भिन्नता है? क्या ये संस्थान संख्यात्मक रूप से वृद्धि के साथ–साथ गुणात्मक रूप से अध्यापकों को प्रशिक्षित कर पा रहे हैं? उक्त प्रश्नों के प्रत्युत्तर में इस क्षेत्र में शोध और व्यापक अध्ययन, वर्तमान समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। शोधकर्त्ता द्वारा चयनित विषय पर राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर शोध कार्य भी हुए हैं। जोना (2010) का अध्ययन विशिष्ट व्यावसायिक दक्षता प्रदर्शित करने वाले शिक्षकों की शैक्षणिक अभिरूचि एवं कार्य संतुष्टि से सम्बन्धित था। किक (2009) ने संस्था–प्रधानों के नेतृत्व व्यवहार का संस्था में कार्यरत् शिक्षकों की शिक्षक अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया। मिल्टन (2010) ने जर्मनी के थिर शहर में प्री–प्राईमरी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक–शिक्षिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धि, शिक्षण–स्तर एवं शिक्षक अभिरूचि का प्रभावात्मक अध्ययन किया। पेटो ने नीदरलैण्ड में शिक्षकों की शिक्षक अभिरूचि एवं उसको प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया। इसी प्रकार के अन्य अध्ययन शोधकर्त्ता को प्राप्त हुए; लेकिन शोधार्थी को अपने शोध से सम्बन्धित विषय पर शोध कार्य उपलब्ध नहीं हुआ। इसलिए शोधकर्त्ता ने उक्त विषय का चयन किया।

अध्ययन के उद्देश्यः–

1. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक– प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन।

शोध परिकल्पाएँः–

प्रस्तुत शोध हेतु निर्मित परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं–

1. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अंतर नहीं है।
3. सरकारी संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रतिदर्शः–

प्रस्तुत शोध में सर्वप्रथम चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से सम्बद्ध शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों की सूची प्राप्त की जिसमें 9 सरकारी सहायता प्राप्त शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान तथा 87 स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थान सम्मिलित थे। सम्पूर्ण जनसंख्या में से 9 सरकारी सहायता प्राप्त प्रशिक्षण संस्थान एवं 11 स्ववित्तपोषित शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थानों का चयन यादृच्छिकी न्यादर्शन चयन विधि द्वारा किया गया। शोधार्थी द्वारा चयनित न्यादर्श का वितरण सारणी 1 में प्रस्तुत है–

सारणी–1

स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक–प्रशिक्षकों की न्यादर्श तालिका

स्ववित्तपोषित संस्थान		सरकारी सहायता प्राप्त संस्थान
87		09
यादृच्छिक विधि से चयनित संस्थान		समस्त सहायता प्राप्त संस्थान
कुल संख्या–11		कुल संख्या–9
चयनित शिक्षक–प्रशिक्षक		चयनित शिक्षक–प्रशिक्षक
107		73

कुल चयनित शिक्षक–प्रशिक्षक = 107 + 73 = 180 शिक्षक प्रशिक्षक

शोध उपकरणः–

प्रस्तुत शोध हेतु प्रयुक्त उपकरण इस प्रकार हैं–

1. डॉ० (श्रीमती) गीता तिवारी एवं डॉ० आर०पी० श्रीवास्तव द्वारा निर्मित 'शिक्षक अभिरूचि परीक्षण।'
2. **प्रदत्त संग्रह–** प्रस्तुत शोध में प्रदत्त संग्रह हेतु सर्वेक्षण की विश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया गया है–

4. **फलांकन–** उक्त मापनी को शिक्षक–प्रशिक्षकों पर प्रशासित कर उनकी प्रतिक्रियाओं के आधार पर प्राप्तांक प्राप्त किए एवं प्राप्तांकों के आधार पर विविध सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया।

5. **प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ–** प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियाँ इस प्रकार हैं–

(क) $M = \frac{\Sigma fx}{N}$ (ख) $S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N} - \left(\frac{\Sigma fd}{N}\right)^2} \times C.L.$

(ग) $t = \frac{(\sigma_1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma_1)^2}{N_2}$

6. **सार्थकता स्तर–** प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं का परीक्षण 0.05 तथा 0.01 स्तरों पर किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्याः–

प्रस्तुत अध्ययन का पहला उद्देश्य स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी–2 में प्रस्तुत है–

सारणी–2

स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन

पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	53	52	243.38	29.57	1.192
सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	26	25 77	231.55	31.59	

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 1.99

0.01 स्तर पर 2.64

सारणी–2 के अनुशीलन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक तथा सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 1.192 प्राप्त हुआ। यह 'टी' मान 0.05 तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान से कम है। अतः इस आधार पर परिकल्पना "स्ववित्तपोषित एवं सरकारी

सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है" स्वीकृत होती है।

प्रस्तुत अध्ययन का दूसरा उद्देश्य स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी–3 में प्रस्तुत है–

सारणी–3

स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन

महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
स्ववित्तपोषित संस्थानों में महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	107	106	245.21	29.24	2.507
सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	73	72 178	234.38	27.92	

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.62

सारणी–3 के अनुशीलन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित संस्थानों के महिला शिक्षक–प्रशिक्षक तथा सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों की महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 2.507 प्राप्त हुआ। यह 'टी' मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना "स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण–अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत होती है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि स्ववित्तपोषित में कार्यरत् महिला प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् शिक्षक–प्रशिक्षकों की अपेक्षा उत्तम है।

प्रस्तुत अध्ययन का तीसरा उद्देश्य सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी 4 में प्रस्तुत है–

सारणी–4

सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य

सरकारी सहायता प्राप्त पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	26	25	234.55	31.59	7.004
सरकारी सहायता प्राप्त महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	73	72 97	234.38	27.92	

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 2.00

0.01 स्तर पर 2.65

सारणी–4 के अनुशीलन से यह स्पष्ट है कि सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 7.004 प्राप्त हुआ। यह 'टी' मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान से अधिक है। अतः इस आधार पर परिकल्पना "सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है", अस्वीकृत होती है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की अपेक्षाकृत उच्च है।

प्रस्तुत अध्ययन का चौथा उद्देश्य स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना प्रस्तावित था। इसकी सांख्यिकीय गणना सारणी–5 में प्रस्तुत है–

सारणी–5

स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षक–प्रशिक्षक	संख्या	स्वतंत्रता अंश	मध्यमान	प्रामाणिक विचलन	'टी' मूल्य
स्ववित्तपोषित संस्थानों के पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षक	53	52	243.38	29.57	4.95
स्ववित्तपोषित संस्थानों के महिला शिक्षक–प्रशिक्षक	107	106 158	245.21	29.24	

अपेक्षित 'टी' मान– 0.05 स्तर पर 1.98

0.01 स्तर पर 2.61

सारणी–5 के अनुशीलन से स्पष्ट है कि स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि के मध्यमानों में प्राप्त अन्तर की सार्थकता हेतु आगणित 'टी' मान 4.95 प्राप्त हुआ। यह 'टी' मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सारणीकृत मान से अधिक है। अतः इस

आधार पर परिकल्पना "स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की अभिरूचि में सार्थक अन्तर नहीं है" अस्वीकृत होती है।

इस आधार पर हम कह सकत हैं कि स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत् महिला शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि पुरुष शिक्षक–प्रशिक्षकों की अपेक्षाकृत उच्च है।

शैक्षिक निहितार्थः–

प्रस्तुत अध्ययन स्ववित्तपोषित एवं सरकारी सहायता प्राप्त संस्थानों में कार्यरत् पुरुष एवं महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि सम्बन्धी विविध सूचनाओं से सम्बन्धित है। उक्त अध्ययन शिक्षक–प्रशिक्षकों की शिक्षण अभिरूचि सम्बन्धी अनगिनत सुझाव देगा; जिससे शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता में उन्नयन किया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. राधाकृष्णन् उद्घृत रामसकल पाण्डेय, भारतीय शिक्षा दर्शन।
2. जॉन ड्यूवी उद्घृत सरोज सक्सैना शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक एवं समाजशास्त्रीय आधार।
3. जगदीश नारायण पुरोहित, भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम।
4. डेन्ट उद्घृत माध्यमिक शिक्षा आयोग रिपोर्ट।
5. श्रीमद्भगवदगीता।
6. ए०पी०जे० अब्दुल कलाम, मेरे सपनों का भारत।
7. डॉ० आर०ए० शर्मा डॉ० शिक्षा चतुर्वेदी, अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी।
8. ए० मल्टीमन्त्र मॉडल ऑफ टीचर एजुकेशन फॉर द 21 सेन्चुरी, यूनिवर्सिटी न्यूज।
9. डॉ० आर०ए० शर्मा एवं डॉ० शिखा चतुर्वेदी, अध्यापक प्रशिक्षण तकनीकी।
10. के०पी० पाण्डेय यूनिवर्सिटी न्यूज (मई 02.05.2005)
11. सरस्वती अग्रवाल, निशा अग्रवाल (2009 : 298) उद्घृत चैलेन्जेज टू टीचर एजुकेशन इन 21 सेन्चुरी।
12. सार्जेट कमीशन उद्घृत, इंडिया टुडे, 7 जुलाई, 2005
13. प्रो० यू०एन० राव उद्घृत, इंडिया टुडे, 7 जुलाई, 2005
14. संगीता 2002, उच्च शिक्षा में स्ववित्तपोषण स्मारिका।